IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में जय प्रकाश नारायण की भूमिकाः एक मूल्यांकन

डा0 सुनिल कुमार
शोध छात्र (इतिहास विभाग)
बी0आर0ए0बी0यू0 मुजफ्फरपुर

जीवनी:– 1 अक्टूबर, 1902 ई0 को बिहार के सारण जिले के सिताबदियारा ग्राम में जन्में लोकनायक जयप्रकाश नारायण की शिक्षा–दीक्षा ग्रामीण स्कूल से शुरू हुई। उसके बाद आगे की पढ़ाई के लिये वे पटना आ गये। पटना कॉलेजिएट स्कूल से उन्होंने प्रथम श्रेणी से मैट्रिक की परीक्षा पास की उसके बाद इंटर(विज्ञान) में पटना कॉलेज में दाखिला लिया। अभी इंटर (विज्ञान) की परीक्षा में लगभग तीन सप्ताह की देरी थी तभी गाँधीजी के द्वारा 1921 ई0 में असहयोग आन्दोलन की शुरूआत हो गयी। जयप्रकाश नारायण ने परीक्षा छोड़ कर असहयोग आन्दोलन में अपनी सक्रियता दिखाई। बाद में महात्मा गाँधी के द्वारा खोले गये बिहार विद्यापीठ से इंटर (विज्ञान) की परीक्षा पास की। चम्पारण आन्दोलन में गाँधीजी के सहयोगी रहे एवं बाद के आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका निभाने वाले ब्रजकिशोर प्रसाद की पुत्री प्रभावती से शादी की। शादी के बाद वे राष्ट्रवादी विचारधारा से प्रभावित होकर दुनिया के क्रांतिकारी आन्दोलन एवं उसके तौर–तरीकों का अध्ययन किया। वे भारत में चल रहे क्रांतिकारी आन्दोलनों के सम्पर्क में भी आये किन्तु उसमें सहयोग नहीं कर सके। अजीत भट्टाचार्य ने अपनी पुस्तक में लिखा है– ''जयप्रकाश जब स्कूल में पढ़ते थे तथा बहुत छोटे थे तभी उनका एक सहपाठी छोटन सिंह ने उनका परिचय बंगाल के एक नौजवान क्रांतिकारी से कराया था। वे गंगा के किनारे एक गुप्त सुनसान जगह में मिले थे। उस क्रांतिकारी ने जयप्रकाश नारायण को बंगाल के क्रांतिकारियों के क्रियाकलापों से अवगत कराया था तथा कुछ पर्चे तथा ब्रिटिश हुकूमत द्वारा जब्त एक किताब 'देश की बात' जिसमें अंग्रेजों द्वारा भारतीयों के शोषण पर प्रकाश डाला था, पढ़ने के लिये दिया। जयप्रकाश नारायण ने उस किताब को घर पर पढ़ा तथा युवकों के क्रांति के प्रवेशोत्सव से काफी प्रभावित हुये जिसमें जलती मोमबत्ती के ऊपर नवागंतुक की एक ऊँगली रख दी जाती थी तथा वह चुपचाप बिना चूँ किये सब कुछ बर्दाश्त करता था। वह क्रांतिकारी जयप्रकाश नारायण से अनेक बार मिला परंतु एक दिन वह अदृश्य हो गया। उसके तुरंत बाद छोटन सिंह गिरफ्तार कर लिये गये। कई वर्षों के बाद छोटन सिंह ने बताया कि किस तरह पुलिस उनका हाथ–पाँव बाँधकर थाने ले गयी थी। परंतु इन सब बातों का जयप्रकाश नारायण ने अपनी पढ़ाई पर कोई असर नहीं पड़ने दिया।[1]

1922 ई0 में जयप्रकाश अमेरिका चले गये वहाँ पर उन्होंने कई कारखानों में मजदूरी की, घूम–घूम कर समान बेचे। ऐसे कई सारी मुसीबतों का सामना करते हुये उन्होंने अपने पढ़ाई को चालू रखा। वे अमेरिका के पाँच विश्वविद्यालय में पढ़ाई की एवं विस्कोंसिन विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम0ए0 की डिग्री हासिल की। 1929 ई0 में वे भारत वापस आ गये। जवाहरलाल नेहरू जो उस समय कांग्रेस के अध्यक्ष थे, उन्होंने जयप्रकाश को अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के श्रम–शोध प्रकोष्ठ का प्रभारी बनाया। 1932 ई0 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के कारण गिरफ्तार कर उन्हें नासिक केन्द्रीय कारा में रखा गया। नासिक जेल में जयप्रकाश को मुलाकात समाजवादी नेता अच्युत पटवर्द्धन, अशोक मेहता, एम0आर0 मसानी, एन0जी0 गोरे और एम0एल0 दांतवाला से मुलाकात हुई।

1934 ई0 में जेल से छुटने के बाद जयप्रकाश ने सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की जो कांग्रेस पार्टी का ही एक हिस्सा था, वे उसके महासचिव बनाये गये। जवाहरलाल नेहरू एवं सुभाषचन्द्र बोस दोनों ने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के गठन का स्वागत किया।[2] 1936 ई0 में जब जवाहरलाल नेहरू अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष बने तब उन्होंने तीन सोशलिस्ट नेता– जयप्रकाश नारायण, नरेन्द्र देव तथा अच्युत पटवर्द्धन को अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी का सदस्य मनोनीत किया। 18 फरवरी, 1940 ई0 को जमशेदपुर में दिये गये भाषण के कारण जयप्रकाश नारायण को नौ महीने का कठिन कारावास की सज़ा दी गयी। उन पर आरोप लगाया गया कि ''उन्होंने अपने भाषण में लोगों को भड़काया था कि वे युद्ध से फायदा उठाये, अंग्रेजों द्वारा भारतीयों का शोषण रोकें, सरकारी कर्ज तथा राजस्व को अदायगी न करें, अपनी कचहरी, अपना थाना तथा अपना शासन स्थापित करें, ब्रिटिश प्रशासन का बहिष्कार करे, रेलवे तथा कचहरी में आम हड़ताल करा कर शासन का अपना अधिकार स्वयं कायम करें, जर्मनी के युद्ध में किसी तरह की मदद तथा सहयोग सरकार को न दें तथा युद्ध में टाटा आयरन तथा स्टील कम्पनी को जो एशिया का सबसे बड़ा स्टील कम्पनी है, भेजे जानेवाले लोहे पर रोक लगावें।[3] 1940 ई0 के अखिल भारतीय कांग्रेस के रामगढ़ अधिवेशन में कांग्रेस के नेताओं ने जयप्रकाश नारायण की गिरफ्तारी की भर्त्सना की। 14 मार्च, 1940 ई0 को पूरे बिहार में ''जयप्रकाश नारायण दिवस'' मनाया गया। रामगढ़ के झण्डा चौक पर जयप्रकाश नारायण दिवस को संबोधित करते हुये राजेन्द्र प्रसाद ने कहा, ''जब कांग्रेस ने सत्ता संभाली तब यह समझा गया कि वह स्वराज्य प्राप्त कर लेगी। लेकिन इस तरह की घटना बताती है कि हमारी मंजिल अभी काफी दूर है। जयप्रकाश नारायण को गिरफ्तार करने की सरकारी नीति स्वस्थ नहीं है। उन्हें गिरफ्तार करके सरकार ने अच्छा नहीं किया है क्योंकि अधिकांश कांग्रेसी नेताओं को इससे क्षोभ हुआ है।[4] जयप्रकाश नारायण को हजारीबाग जेल में रखा गया जहाँ से वे 28 नवम्बर, 1940 ई0 को छूटे। उसके तुरंत बाद उन्हें दिसम्बर में गिरफ्तार कर लिया गया तथा देवली डिटेंसन कैंप में रखा गया।

17 अक्टूबर, 1941 ई0 को देवली डिटेंसन कैंप से जयप्रकाश नारायण ने अपनी पत्नी की मदद से कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के गुप्त क्रांतिकारी दस्तावेज की प्रति जिस पर सरकार ने रोक लगा दी थी। उस दस्तावेज को बाहर भेजने का प्रयास किया। लेकिन पुलिस के अधिकारियों ने इस दस्तावेज को पकड़ लिया तथा इस घटना का काफी प्रचार किया। इस दस्तावेज में रिव्युलुशनरी सोशलिस्ट पार्टी तथा हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन की मदद से कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी को मजबूत बनाने की योजना थी। इस मुद्दे पर जयप्रकाश नारायण तथा सोशलिस्ट पार्टी की भर्त्सना करने की पूरजोड़ कोशिश ब्रिटिश हुकूमत के द्वारा की गयी। लेकिन महात्मा गाँधी ने जयप्रकाश नारायण का समर्थन में बयान जारी करते हुये परिस्थिति को ठीक विपरित बना दिया। देवली कैंप जेल की दुर्व्यवस्था के खिलाफ जयप्रकाश नारायण ने कुल 31 दिनों का भूख–हड़ताल किया जिसके परिणामस्वरूप 1942 ई0 में उन्हें हजारीबाग जेल में स्थानान्तरित कर दिया गया। 8 अगस्त, 1942 ई0 को बम्बई में कांग्रेस कमिटी के द्वारा ''भारत छोड़ो'' का प्रस्ताव पारित किया जिसके परिणामस्वरूप पूरे देश में ब्रिटिश राज को समाप्त करने के लिये खुला विद्रोह शुरू हो गया। जयप्रकाश नारायण भारत छोड़ो आन्दोलन में शामिल होने के लिये बेचैन हो गये। इस बेचैनी ने उन्हें आखिरकार दीपावली की रात 9 अक्टूबर, 1942 ई0 को जेल से भागने पर मजबूर कर दिया। उनके साथ जेल से भागने वालों में रामनन्दन मिश्र, योगेन्द्र शुक्ल, सूरज नारायण सिंह, गुलाबचन्द गुप्त तथा शालीग्राम सिंह शामिल थे। 29 दिसम्बर 1942 ई0 को दिल्ली में अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी को भूमिगत केन्द्रीय निदेशालय की सभा हुई जिसमें कांग्रेस के अधिकाधिक संगठन को पुनर्गठित किया गया। इस सभा में भाग लेने वालों में थे– जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया, उत्तर प्रदेश के पूर्व कांग्रेस संसदीय सचिव युगल किशोर, देवदास गाँधी, अच्युत पटवर्द्धन तथा बी0पी0 सिन्हा। जयप्रकाश नारायण ने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया, क्रांतिकारी आन्दोलन के प्रथम चरण की असफलता का अवलोकन किया, कांग्रेसजनों को निर्देश दिया तथा क्रांतिकारी अभिवादन के साथ आजादी की लड़ाई लड़ने वालों को, विद्यार्थियों को तथा अमेरिकी सैनिकों को पत्र लिखा। साथ ही बिहार समेत सम्पूर्ण भारत के लोगों से पत्र लिख कर आग्रह किया।

जयप्रकाश नारायण ने ब्रिटिश भारतीय सीमा के बाहर, नेपाल की तराई के 'बकरी का टापू' में अंग्रेजों के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध की तैयारी के दौरान 21 मई, 1943 ई0 को ब्रिटिश हुकूमत के दबाव में नेपाल की पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उनके साथ गिरफ्तार देशभक्तों में राममनोहर लोहिया, श्यामनंदन सिंह, बैद्यनाथ झा तथा कार्तिक प्रसाद सिंह थे। उन सभी को गिरफ्तार कर हनुमान नगर पुलिस चौकी में बंद कर दिया गया। जयप्रकाश नारायण एवं अन्य साथियों की गिरफ्तारी के बाद आजाद दस्ता के अन्य सदस्यों ने सूरज नारायण सिंह के नेतृत्व में पुलिस चौकी पर धावा बोलकर उन देशभक्तों को पुलिस कब्जे से छुड़ा लिया। पुलिस ने आजाद दस्ता के दफ्तर पर छापा मार कर बम बनाने से संबंधित कुछ साहित्य, कुछ टॉमी गन, 355 बेल्वी रिवाल्वर तथा अन्य अस्त्र–शस्त्र बरामद किया।[6] जेल से पलायन के बाद जयप्रकाश नारायण भूमिगत आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे। जयप्रकाश कलकत्ता से सिंगापुर में सुभाषचन्द्र बोस के आजाद हिन्द फौज से सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश की लेकिन कामयाब नहीं रहे।[7] 30 जुलाई, 1943 ई0 को गुलाबचन्द गुप्त की मदद से आजाद दस्ता के लिये धन इकट्ठा करने मुजफ्फरपुर गये।[8] 12 सितम्बर, 1943 ई0 को पंजाब के मुगलपारा रेलवे स्टेशन से जयप्रकाश नारायण को गिरफ्तार कर लिया गया एवं सुरक्षा बंदी के रूप में लाहौर के किले में रखा गया। उनकी गिरफ्तारी से देश के साथ–साथ विदेशों में भूचाल सा आ गया। बम्बई के एक नामी बैरिस्टर पार्दीवाला ने लाहौर उच्च न्यायालय में एक हैबियत कोर्पस की अर्जी दाखिल की जिसके कारण उन्हें दो दिनों के कारावास की सजा हुई। ब्रिटिश लेबर पार्टी ने घोषण की कि जयप्रकाश नारायण को बचाने के लिए वह अपना वकील भेजेगी। रेगीनैड सोरेनसेन के नेतृत्व में ब्रिटिश लेबर पार्टी का एक प्रतिनिधिमण्डल ने जयप्रकाश नारायण से मुलाकात की। दूसरी तरफ उन्हें लाहौर से आगरा जेल में स्थानान्तरित कर दिया। परिणामस्वरूप 11 अप्रैल, 1946 ई0 को राम मनोहर लोहिया के साथ

जयप्रकाश नारायण को जेल से रिहा कर दिया गया। इन्हीं देशभक्तों के परिश्रम एवं त्याग की देन है कि हमारा देश 15 अगस्त 1947 ई0 ब्रिटिश हुकूमत की गुलामी से आजाद हुआ।

आजाद दस्ताः– यूरोप में उन दिनों जिन देशों पर जर्मनी ने कब्जा किया था, वहॉ–वहॉ छापामार दस्ता गुरिल्ला बैंड का संगठन किया गया था और वे छापेमार दस्ते जर्मनी को नाकोदम किये हुये थे। हम भी अपने देश में अंग्रेजों को नाकोदम कर दें– इसके लिये छापेमार दस्ते कायम किये जाये। उन्ही उद्देश्यों को दृष्टि में रखकर जयप्रकाश ने ''आजाद दस्ता'' का संगठन शुरू किया। यह भारत छोड़ो आंदोलन के बाद क्रांतिकारियों द्वारा प्रथम गुप्त गतिविधियॉ थी। जयप्रकाश नारायण ने इसकी स्थापना नेपाल की तराई के जंगलों में रहकर की थी। बिहार प्रांतीय आजाद दस्ते का नेतृत्व सूरजनारायण सिंह के अधीन था। लेकिन भारत सरकार के दबाव में मई 1943 में जयप्रकाश नारायण, डॉ0 लोहिया, रामवृक्ष बेनीपुरी, श्यामनंदन बाबु, कार्तिक प्रसाद इत्यादी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। आजाद दस्ता के निर्देशक बाबु श्यामसुंदर प्रसाद थे। ''आजाद दस्ता'' की हस्त–पुस्तिका नंबर दो में जयप्रकाश ने कहा– ''तोड़फोड़ गुलाम और पीड़ित का एक अमोघ अस्त्र है, जिसके द्वारा वह अपने शासकों से लड़ती आई है। जनता को गुलाम बनाये रखने और उसे चूसने–दूहने के लिये जिन साधनों का निर्माण शासकों ने कर रखा है, उनका संहार करना, उनके कलपुर्जों को चकनाचूर करना, यातायात के साधनों को बेकाम कर देना, इमारतों और भंडारों को भस्मीभूत कर देना– ये सब काम तोड़फोड़ के अन्दर आते हैं।''

इसके बाद पुस्तिका तोड़फोड़ के विभिन्न रूपों की व्याख्या करती है। पहले तोड़फोड़ को तीन हिस्सों में बॉटा गयाः–

1. यातायात के साधनों का तोड़फोड़– जिसमें तार, टेलीफोन, डाक, बेतार के तार, रेलवे, सड़क, पुल इंजिन और लॉरी–बस शामिल है।
2. औद्योगिक साधनों की तोड़फोड़– जिसमें फैक्ट्री, मिल, खान और जहाजी अड्डे शामिल है।
3. अग्निकांड– जिसमें सरकारी कागज–पत्रों, इमारतों, पेट्रोल की टंकी और गोले–बारूद के भंडारों में आग लगाना शामिल है।

तोड़फोड़ के इन रूपों और तरीकों को सफलतापूर्वक काम में लाने के लिये दो तरह के संगठन को जरूरत बताई गई है। यातायात के साधनों एवं अग्निकांड के लिये 'आजाद–दस्ता' का व्यापक संगठन होना चाहिए। किन्तु औद्योगिक तोड़फोड़ तभी कामयाब हो सकती है, जब आजाद दस्ता के सदस्य उसमें घुसकर चुपचाप काम करें। यों ही तोड़फोड़ के लिये हमेशा महत्व की चीजों को ही चुनना चाहिए, साथ ही ऐसी तोड़फोड़ कभी नहीं करनी चाहिए, जिससे सरकार के बदले जनता को ही ज्यादा नुकसान उठानी पड़े। तोड़फोड़ तभी सफल होती है, जब जनता का पूरा समर्थन उसे प्राप्त हो।[9]

राममनोहर लोहिया ने ''क्रांति की तैयारी करो'' नामक अपने लेख में इन दस्तों की उपयोगिता के बारे में लिखा– ''धुन के पक्के और शिक्षा पाये हुये पॉच–पॉच आदमियों के दस्ते ऐसे तैयार किये जाये, जो ज्योहीं क्रांति शुरू हो, आगे बढ़ कर जनता का नेतृत्व करें और उसे कामयाबी तक पहुॅचायें। बड़ा से बड़ा बलिदान करके भी आप से आप विद्रोह के लिये खड़ी हुई जनता जो काम पूरी तौर से नहीं कर सकती, वे ही काम इन दस्तों के चलते आसानी से सम्पन्न हो सकेंगे। जुलूस पर गोली चलाने के लिये भेजे गये या ब्रिटिश हुकूमत के केन्द्रों की रक्षा पर तैनात किये गये सैनिकों के हथियार छीनने की बात हो या सड़क काटने, तार काटने, रेल की पटरियॉ उखाड़ने और रेल–गाड़ियों का चलना बन्द करने की बात हो, थानों पर, जेलों पर, कचहरियों पर और सेक्रेटेरियट पर जनसमूह को लेकर धाबा करने की बात हो– इन सभी कामों के लिये पहले से ही विशेष शिक्षा प्राप्त किये हुये नौजवानों से बने ये दस्ते कमाल कर दिखायेंगे। जिन–जिन क्षेत्रों में ऐसे दस्ते होंगे वहॉ क्रांति शुरू होते ही ब्रिटिश हुकूमत राज का खात्मा चुटकी बजाते कर दिया जा सकता है और इनसे प्रोत्साहन पाकर दूसरे क्षेत्रों में भी क्रांति की ज्वाला धधक उठेगी और ब्रिटिश राज को स्वाहा कर देगी।'' जयप्रकाश के नेपाल में पहुॅचते ही सारे बिहार के क्रांतिकारियों में हलचल मच गई। जितने फरार और सपोश क्रांतिकारी थे, सब नेपाल की ओर दौड़े। नेपाल को ही अन्ततः आजाद–दस्ता का अखिल भारतीय केन्द्र बनाया गया। कोसी–नदी के कछार में 'बकरों का टापू' नामक एक स्थान है, वहीं पर जयप्रकाश के लिये फूस का मकान बनाया गया। घर बनाये गये, कुॅआ खोदा गया। बाहर से सम्पर्क रखने के लिये दो घोड़े खरीदे गये, बैलगाड़ी खरीदी गई। डाकखाना और स्टेशन से अखबार लाने का प्रबंध किया गया। जहॉ जयप्रकाश का घर बनाया गया उससे कुछ दूर पर आजाद दस्ता का बिहार प्रान्तीय दफ्तर बनवाया गया। दो हरकारे रखे गये जो जयप्रकाश और प्रान्तीय दफ्तर में सम्पर्क बनाये रखे। जयप्रकाश के घर से कुछ दूर पर सामने एक पहाड़ था। विचार किया गया कि वही रेडियो स्टेशन बनाया जाये। उसके लिये ट्रांसमीटर और बैट्री वगैरह लाने का भी प्रबंध किया गया।[10]

जयप्रकाश के साथ एक डॉक्टर भी थे। वहॉ यह प्रचार किया गया था कि नये डॉक्टर साहब यहॉ प्रैक्टिस करने आये हैं और उनके साथ उनका परिवार भी आया है। विजया की उपस्थिति से परिवार की तस्वीर स्पष्ट हो जाती थी। बिहार के लिये एक आजाद–कौंसिल का संगठन बनाया गया, जिसके संयोजक सूरजनारायण बनाये गये थे। प्रान्तीय कौंसिल के तीन शिक्षण शिविर खोलने का निर्णय किया था और तीनों ही शिविरों के लिये आजाद–दस्तों के सैनिकों की भर्ती भी जिले–जिले में शुरू कर दी गयी थी। जयप्रकाश नेपाल में दो महीने रह चुके थे। विजया महाराष्ट्र लौट गयी थी। शिविर का काम सामान्य रूप से चल रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि अब सफलता निकट है कि चारों ओर से भनक सुनाई पड़ने लगी। ब्रिटिश हुकूमत के कहने पर नेपाल–सरकार जयप्रकाश की खोज करने लगी। यह चर्चा आम होने लगी कि किसी भी दिन जयप्रकाश के आवास या शिविर पर खुफिया पुलिस छापा मार सकती है। आजाद दस्ता को रूपये की कमी होने लगी जिसके इंतजाम में श्यामनन्दन बैलगाड़ी पर सवार होकर थोड़ी दूर ही चले थे कि सामने से नेपाली फौज को आते देखा। श्यामनन्दन जब तक कुछ समझते तब तक नेपाली फौज ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया। ''आप कौन हैं? कहॉ जा रहे हैं? इसके उत्तर में श्यामनन्दन के स्पष्ट किया कि ''पूर्णिया जिला घर है न्यौते में आये थे, अब लौट रहे हैं।'' लेकिन नेपाली फौज को उनकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ। दो फौजी को वहॉ उन पर नजर रखने के लिये छोड़ कर वह फौजी दस्ता आगे बढ़ गया। श्यामनन्दन वस्तुस्थिति को समझ गये, उन पर नजर रखने वाले दो पुलिस वालों को बहला कर गाड़ीवान के द्वारा जयप्रकाश को इसकी सूचना देने के लिए भेजा। लेकिन जब तक गाड़ीवान जयप्रकाश के पास पहुॅचता तब तक देर हो चुकी थी। जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया दो अन्य साथियों के साथ गिरफ्तार कर लिये गये थे।[11]

उस समय जयप्रकाश नारायण बरामदे पर बैठे थे। नेपाली फौज पहुॅचकर कहा– आपलोग गिरफ्तार हैं, हनुमाननगर चलिये। ''हमलोगों को गिरफ्तार किया जा रहा है?'' यह पूछे जाने पर कप्तान ने सिर्फ यह कहा कि ये सब बातें वहीं बड़े हाकिम से मालूम होगी। वे सभी सशस्त्र थे, अतः उनके पीछे हो लिया गया। थोड़ी दूर आने पर श्यामनन्दन को भी गिरफ्तार कर लिया गया। कोसी नदी को पार कर रात को एक स्थान पर सभी ठहर गये। सशस्त्र सिपाही चारों ओर घेरा डाले हुये थे। श्यामनन्दन सिंह ने कप्तान को एक कहानी सुनायी'' जयप्रकाश एक बड़े घर के एकलौते सपूत हैं। उसका घर सीतामढ़ी के नजदीक है। जाति के भूमिहार ब्राह्मण हैं। उनका एक पट्टीदार है, जिससे खानदानी दुश्मनी है। पट्टीदार की दोस्ती थानेदार से है। हाल ही में सीतामढ़ी का एस0डी0ओ0 मारा गया है। अब पट्टीदार चाह रहा है कि अपने दोस्त थानेदार से मिलकर उन्हें उस कत्ल के केस में फॅसा दे और उन्हें फॉसी हो जाये तो हमेशा के लिये वह झंझर से मुक्त हो जाये, क्योंकि वह भाई में अकेले है पिता मर चुके हैं– सिर्फ मां बची हुई है और युवती पत्नी है। कप्तान कह रहा है– घबराइये मत, आपलोग छूट जाइयेगा। कुछ बड़े क्रांतिकारी लोग यहॉ आ गये हैं, हम उन्ही की तलाश में हैं। आपलोगों से सिर्फ पूछताछ कर छोड़ दिया जायेगा। दूसरे दिन जयप्रकाश से मिलने के लिये जब दो देशभक्त घूम रहे थे उन्हें भी नेपाली फौज ने पकड़ लिया। अब पॉच से सात हो गये। तीन बैलगाड़ी पर बैठाकर चल दिये।

भोर में जयप्रकाश शौच के लिये नदी की तरफ चले। साथ ही बंदूक लिये सिपाही थे। सिपाही इधर खड़े हो गये, जयप्रकाश नदी के कछार में शौच के लिये बढ़े। नदी के उस पार उन्होंने एक लड़के को देखा। अरे, यह तो परिचित आदमी मालूम होता है। कौन है? शशि तो! उधर शशि की ऑखों से ऑसू की धारा निकल रही है। उसे इशारा करते हैं, बैठ जाओ। वह बैठ जाता है। फिर उसे कहते हैं– प्रताप (सूरजनारायण) को जाकर खबर दो, जब हमें अंग्रेजी सरहद में ले जाया जाये, तो जिस कीमत पर हो हमें छुड़ाने की कोशिश करें।[12] रात के अंधेरे में ये लोग हनुमाननगर पहुॅचे। उसी समय बड़ा हाकिम आया और इन्हें देखा। फिर उसने टेलीफोन पर काठमाण्डू से बातें की इन सभी को गार्ड रूम में रखा गया। भोर से ही कचहरी शुरू हुई। सबसे पहले श्यामनन्दन अपना बयान देते हैं। वही कहानी दुहरा जाते हैं। कहते हैं– हजूर, मालिक जयप्रकाश बिल्कुल सीधे–सादे आदमी है, धर्मभीरू व्यक्ति हैं। कभी किसी की हानि न की, कभी किसी का बुरा नहीं चाहा। तो भी इनके पीछे दुश्मन पड़े हैं। भाग कर बाबा पशुपतिनाथ की शरण में आये थे.....।

राममनोहर लोहिया तो काफी वक्त लिये। लोहिया जयप्रकाश के लंगोटिया यार हैं। आई0ए0 तक पढ़े हुये हैं। वह हाकिम को बताते हैं कि ''हम शरणार्थी हैं। नेपाल हिन्दू राज्य है, क्षत्रिय राज्य है। हिन्दू राजा, क्षत्रिय राजा कभी अपनी शरण में आये व्यक्ति को कष्ट नहीं देते, बल्कि अपराधी शरणार्थी की भी रक्षा में अपने सर्वस्व की बाजी लगा देते हैं। हमने कोई अपराध नहीं किया है, हमें क्यों कष्ट दिया जा रहा है? वह कुछ कानूनी बातें भी पेश करते हैं। नेपाल स्वतंत्र राज्य है। एक स्वतंत्र राज्य की हैसियत से वह बाध्य नहीं हैं कि अंग्रेजों के अपराधी को उन्हें सौंपे या दण्ड दें। अंग्रेज अगर ऐसी मांग करते हैं तो नेपाल की स्वतंत्रता पर आघात करते हैं, उसका अपमान करते हैं। दुनिया भर के राजनीतिक अपराधी इंग्लैण्ड की जमीन पर पैर रखते ही अपने को निरापद समझने लगते हैं। नेपाल की भूमि क्या इंग्लैण्ड की जमीन से कम पवित्र है? हिन्दुस्तान भर में सिर्फ नेपाल की भूमि ही पवित्र है इसकी ओर हिन्दुस्तान भर के स्वतंत्रता प्रेमियों का ध्यान लगा है। यह स्वतंत्रता एक धरोहर है। इसकी रक्षा आप करते आये हैं। आज भी कीजिये।[13] शेष चार व्यक्ति भी अपने बयान देते हैं। उनके बयान मामूली होते हैं– हम सीधे–साधे किसान हैं, अंग्रेजों के डर से भागकर नेपाल आये हैं अंग्रेज हिन्दुस्तान में जुल्म कर रहे है।, जिसको चाहते हैं गोली मार देते हैं, फॉसी पर चढ़ा देते हैं। हम हिन्दू हैं, आप हिन्दु राजा है, मलेच्छों से हमें बचाइये सरकार। बीच–बीच में हाकिम जिरह भी करता जाता है और रह–रहकर टेलीफोन पर काठमाण्डू से बातें करता है। उसके पास कुछ फोटो भी हैं। उनसे वह इनके चेहरे का मिलान करता है। शायद किसी का चेहरा मिल नहीं रहा है– लोहिया का चेहरा गुलाली सोनार के फोटो से मिल रहा है। लेकिन तय है कि इसमें जयप्रकाश नहीं हैं। हाकिम बयान लिखा और खुश होते हुये बोला ''आपलोग घबड़ाये नहीं। पशुपतिनाथ बाबा की कृपा से सभी जल्दी ही छूट जायेंगे।[14]

दूसरी तरफ शशि ने अपना काम सफलतापूर्वक कर दिया। जयप्रकाश नारायण एवं अन्य साथियों की गिरफ्तारी की खबर पत्र के द्वारा ''आजाद दस्ता'' के प्रमुख कार्यकर्त्ता सूरजनारायण सिंह को मिल गई। जल्दी–जल्दी में सभी साथी तैयार हुये। तीन बन्दूकें, तीन राइफल, दो रिवाल्वर और एक डाइनामाइट लेकर सभी चल पड़े। आजाद दस्ता के सैनिकों को न तो पत्र का उद्देश्य मालूम था और न मंजिल और न किसी को यह जानने की ही उत्सुकता थी। उन्हें सिर्फ देश के नाम पर कुर्बान होने की तमन्ना थी। 35 के 35 सैनिक बिना खाये पीये एक सुर में दौरे सो एक ही बार हनुमाननगर ही जाकर रूके। हनुमाननगर पहुॅच कर एक जगह थोड़ा विश्राम किया और वहीं पर आगे क्या कार्यवाही होगी उसके बारे में योजना बनायी। नेपाल के कुछ लोग साथ देते रहे, उनके चलते पता चल गया कि कहॉ पर किस तरह से उन्हें रखा गया है। ज्योंही हमला हो, काठमाण्डू के टेलीफोन का तार काट दिया जाये। दो आदमियों को उसके लिये मुकर्रर कर दिया गया। इन लोगों के पास सिर्फ तीन बंदूकें, तीन राइफल, एक डाइनामाइट और दो रिवाल्वर थे। बाकी लोगों को बॉस चीरकर खुरदरे फट्ठे दे दिये गये। बॉस के इन फट्ठे की मार से नेपाली सैनिक बहुत घबड़ाते हैं।[15] आधी रात के लगभग छापेमारों का यह दस्ता हनुमाननगर कचहरी पहुॅचा। दो लड़के फूस के घर की ओर बढ़े, तेल छिड़का, दियासलाई जला कर उस पर फेंकी। किन्तु आग नहीं लगी, वे घबराकर भागे। सूरज ने उन्हें रोका और उन्हें फिर भेजा। उसी समय एक किसान उधर से निकला, जब तक वह हल्ला करें उसकी गर्दन पर सूरज का हाथ था। उसने डर से बता दिया कि संतरी किधर है। सरदार ने राइफल का निशाना लिया। लेकिन राइफल फेल हो गई। उसके बाद सूरज ने रिवाल्वर चलाई जो रोशनी में जा लगी। उसका शीशा फूट गया।

इतने में संतरी की तरफ से एक गोली आई और सूरज नारायण सिंह के कनपटी से होकर सन्न से निकल गई। सुरजनारायण सिंह ने अपनी रिवाल्वर सरदार को देकर उनसे कहा कि गोलियॉ चलाते रहो। वे लगातार गोलियॉ चलाते रहे। दूसरी तरफ सूरज नारायण दौड़ कर संतरी को पकड़ लिया, उससे राइफल छीन ली। फिर तो कोहराम मच गया, दोनों ओर से गोलियों की बौछारें होने लगी– पैतीसों छापेमार जोरों से हल्ला करते हुये टूट पड़े। भीषण गर्मी में सातों कैदी को छोटी जगह में सट–सट कर सोने को लाचार थे। दो संतरी पहरेदारी कर रहे थे बाकी संतरी सो गये थे। जैसे ही गोलियों की आवाज हुई लोहिया बोल पड़े। What a hell is this? श्यामनन्दन सिंह उनकी बगल में सोये थे बोले "Perhan's they are our men"[16]

बेकाबू देशभक्तों को देखकर संतरी भाग खड़े हुये, सूरज नारायण नजदीक पहुंचकर कहा भागिये–भागिये। सातों कैदी भाग रहे हैं। लेकिन आपा–धापी में देशभक्तों में से कोई श्यामनन्दन सिंह की पीठ पर एक लाठी मार दिया, दुश्मन समझकर। सूरज नारायण दुश्मन समझकर झुके हुये लोहिया को जोरों से दबोच लेते है। ''अरे भाई चश्मा खोज रहा हूँ।'' तब जाकर कहीं उन्हें फुर्सत मिलती है। सबसे बढ़कर तो आफत आई जयप्रकाश पर। एक तरफ कॉटे का घेरा था, दूसरी ओर से एक आदमी उनकी छाती पर रिवाल्वर लिये खड़ा है, दुश्मन समझकर। यह देख श्यामनन्दन सिंह उनकी तरफ झपटे जिससे उनकी जान बची, किन्तु कॉटे से पैर तो घायल हो ही गये और लोहिया से भी चला नहीं जाता।[17] वहॉ से भागने के बाद वे सभी रात भर पैदल चलते हुये भारतीय सीमा में आ गये। भारतीय सीमा में आने के बाद समूह दो टूकड़ों में विभक्त हो गई। आजाद दस्ता आगे भी अपनी सक्रियता दिखाता रहा लेकिन कुछ समय के बाद जयप्रकाश की गिरफ्तारी हो गई और आजाद दस्ता शिथिल पड़ गया।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आजादी के बाद भी भारत माता को समर्पित यह सपूत थके नहीं, हारे नहीं बल्कि राजनीतिक जीवन में अपनी सक्रिय भूमिका निभाते हुये देश को सही दिशा–निर्देश देते रहे। वे समाज सेवक थे, जिन्हें 'लोकनायक' के नाम से भी जाना जाता है। 1948 ई0 में महात्मा गाँधी को सुरक्षा नहीं देने के कारण बल्लभ भाई पटेल को कड़े शब्दों से आलोचना के साथ ही 1948 ई0 के नासिक कांग्रेस में कांग्रेस–सोशलिस्ट पार्टी ने कांग्रेस छोड़ने का फैसला किया। कांग्रेस–सोशलिस्ट पार्टी कांग्रेस से अलग हो गयी तथा बाद में अपने नाम से कांग्रेस शब्द को भी हटा दिया।[18] 1954 ई0 में जयप्रकाश नारायण राजनीति से सन्यास ले लिये तथा भूदान तथा सर्वोदय आन्दोलन को असली जामा पहनाने में लग गये। 1974 ई0 में उन्होंने इंदिरा गाँधी की सरकार को अपदस्थ करने के लिये एक आन्दोलन चलाया। 1977 ई0 में उन्होंने जनता पार्टी बनाने में मदद की जो इंदिरा गाँधी को केन्द्र में अपदस्थ कर सत्ता में आ गयी। आखिरकार देश के प्रति समर्पित इस वीर सपूत की मृत्यु 8 अक्टूबर, 1979 ई0 को हो गई। ये आजादी के दिवाने तथा एक महान व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे। मरणोपरांत उन्हें भारतरत्न से समान्नित किया गया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:–

1. भारत सरकार के गृह सचिव का पत्र बिहार सरकार के न्यायिक सचिव को शिमला, सितम्बर, 1938
2. पॉलिटिकल(स्पेशल), बिहार सरकार, फाईल नं0–363, 1938
3. भट्टाचार्य, अजित– जयप्रकाश नारायणः ए पॉलिटिकल बायोग्राफी, दिल्ली 1971, पृ0सं0–28–29
4. घोष, शंकर– लीडर्स ऑफ मॉडर्न इंडिया, नई दिल्ली, 1980, पृ0सं0–376
5. पॉलिटिकल(स्पेशल)– बिहार सरकार, फाईल सं0 86, 1940
6. इंडियन नेशन, अक्टूबर 18, 1941
7. रामनंदन मिश्र, संस्मरण, लहेरियासराय, 1981, पृ0सं0–58
8. भूयां, अरूण– दि क्वीट इंडिया मूवमेंट, पृ0सं0–112
9. बेनीपुरी, रामवृक्ष — जयप्रकाश, उषा प्रकाशन, मुँगेर, 1975 पृ0सं0, 112
10. राम, मुनीश्वर ''मुनीश'' — बज्जिकांचल का स्वतंत्रता संग्राम, अभिधा प्रकाशन, 2005, पृ0सं0–132–33
11. बेनीपुरी, रामवृक्ष — पूर्वोद्धत
12. राय, मुनीश्वर ''मुनीश'' — पूर्वोद्धत
13. बेनीपुरी, रामवृक्ष– — पूर्वोद्धत, पृ0 सं0–117
14. दत्त, के0के0 – — बिहार में स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी 1999, पृ0सं0–257–58
15. राय, मुनीश्वर ''मुनीश''– — पूर्वोद्धत
16. बेनीपुरी, रामवृक्ष – — पूर्वोद्धत, पृ0सं0–119
17. — वही
18. बेनीपुरी, रामवृक्ष– — जयप्रकाश, पटना 1967, पृ0सं0–229–239